Sangeet Kuuranangwal

Part - 3

Ujla Sahu [illegible]

by Mathuraram Sharma Gaud

Pub Madhavalal [illegible] Sharma Gaud

Hathras

Printed 1929 Price Anna 6-2

॥ श्री श्याम देवाय नमः ॥

मुराद इन्द्रमन

संगीत शिरोमणि हिन्दी भूषण पं० नथाराम शर्मा गौड़ रचित

नं० ८ भूरनमल तीसरा भाग

सत्य वक्ता

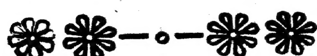


फोटो–सांगीत शिरोमणि हिन्दी भूषण पं० नथाराम शर्मा गौड़

प्रिंटर व पब्लिशर पं० राधावल्लभ शर्मा गौड़
श्याम प्रेस हाथरस।

श्री श्याम देवाय नमः

सं० पूरनमल भक्ती परा भाग



मङ्गला चरण

दो०—प्रथम सुमिर गवरीश सुत, विघन विदारनहार ।
जिन की कृपा कटाक्ष से, होत सकल भव पार ॥

चौ०—होत सकल भव पार ध्यान मन गवरि तनय का धरते।
हों आनन्द समाप्त कार्य सब कष्ट शम्भु सुत हरते ॥
करें भक्त की पक्ष सदा धन धान्य सम्पदा भरते ।
इन्द्रमन गोविन्ददास स्तुति गणेश की करते ॥

दौ०—नमो गिरजा के नन्दन । हरण अघ आनन्द कन्दन
अनुग्रह करिये स्वामी ।
पूरण हो मन की इच्छा वर दीजै अन्तरयामी ॥

कवि का

दो०—सुन गुरु गोरख का जिकर, डरी सुन्दरा नार ।
दिल ही दिल में इस तरह, करने लगी विचार ॥

सुन्द्रादे का मन ही मन में

दो०—ओ हो जो कह गये थे, काशी के महाराज ।
प्रभू कृपा से वह बचन, ठीक हुए हैं आज ॥

चौ०—ठीक हुए हैं आज करी जगदीश महरबानी है ।
गोरख गुरु को सुना बड़ा ज्ञानी ध्यानी दानी है ॥
झांको कर नाथ की करू निज सफल जिन्दगानी है ।
सुश्रूषा कर खूब मुरादें मांगू मनमानी है ॥

दौ०—ये पक्का पढ़ा पढ़ाया । नहीं समझे समझाया ॥
क्यों नाहक जिद बढ़ाऊं ।

कर प्रसन्न गोरख गुरु से ही इसे मांग कर लाऊं ॥

कवि का

दो०—कर दिल ही दिल मशवरा, सुन्द्रादे सुकुमार ।
पूरनमल से रही यों, मीठे वचन उचार ॥

सुन्द्रादे का

दो०—गोरख के डर से मुझे, डरा न सक्ते आप ।
मगर समझ कुछ होगई, मैं खुद ही चुपचाप ॥
चौ०—मैं खुद ही चुपचाप खैर ये वाद विवाद हटादो ।
ठहरी कहां जमात नाथ की चल कर साथ दिखादो ॥
झांकी बांकी गुरु अपने की श्री महाराज करा दो ।
पैर पड़ूं अगले पिछले सब पाप मेरे छुड़वादो ॥
दौ०—ले व्यञ्जन विविधि भांति के । जिमावन हित जमात के
आप के साथ चलूंगी ।
करि प्रसन्न सेवा से गुरु को मन माना वर लूंगी ॥

पूरनमल का

दो०—साथ हमारे में तेरा, चलना होय फिजूल ।
भिक्षा तेरे हाथ से, करें न गुरू कबूल ॥
चौ०—करें न गुरू कबूल भीख यह ख़्याल हटादे दिल से ।
जाहिर हो रही साफ कम्बख़्त हत्या तेरी शकल से ॥
छिपे न गुरु से भेद विदित होजाय जोग के बल से ।
करना चाहै खुश उन को क्यों खारिज हुई अकल से ॥
दौ०—गुरू मेरे का दरशन । न कर सक्ता पापी जन ॥
पाप तें कीना भारी ।
लाखों सन्तों के कटवाये सर पापिन हत्यारी ॥

सुन्द्रादे का

दो०—भिक्षा मेरे हाथ की, अगर गुरू ना खांइ ।
तो फिर क्यों मांगन यहां, तुम को दिया पटाइ ॥
चौ०—फिर क्यों दिया पठाइ सखन ये नहीं समझ में आते

भिक्षा मार मेरे यहाँ से तुम अगर वहाँ ले जाते ॥
कुल जमात युत गुरू तुम्हारे आते या नहिं आते ।
नहीं बहाना चले आप ये झूठ महा फरमाते ॥
दो०—ले व्यञ्जन विविधि भांति के । जिमावन हित जमात के॥
आप के साथ चलूंगी ।
कर प्रसन्न सेवा से गुरु को मन माना वर लूंगी ॥

पूरनमल का

दो०—भिक्षा करने यहाँ पर, मुझे न भेजा नाथ ।
गुरु भइयों ने छल किया, रानी मेरे साथ ॥
चौ०-रानी मेरे साथ छल किया मुझे फंसाना चाहा ।
बोली गोली मार यहाँ से भीख मंगाना चाहा ॥
था मतलब उन का ये मेरा शीश कटाना चाहा ।
दुनियाँ से पूरन का नामो निशाँ मिटाना चाहा ॥
क०—गुरू का प्यार मेरे पर न गुरु भइयों को भाया हैं ।
बहाना भीख का कर के मुझे यहाँ पर पठाया है ॥
न था आगाह उन की चाल से छल से रकावत से ।
दिली मतलब जो था उन का सो सब अब जान पाया है ॥
दो०—न गुरु ने मुझे पठाया । बिन कहे उन से आया ॥
खबर जो वह पा लेते ।
भिक्षा लेने तेरे यहाँ पर कभी न आने देते ॥

सुन्द्रादे का

दो०—जोगी अगर जमात के, मानैं तुम से बैर ।
तो अब उन की जान की, मती समझना खैर ॥
चौ०-मती समझना खैर बैर को सब को कड़ी सजा दूं ।
छल फरेब का चख कर उन दुष्टों को मजा चखा दूं ॥
जितने हैं जमात में जोगी सब को बुला बुला दूं ।
हुकम करो सो करूं साथ सर के इरशाद बजा दूं ॥
दो०—ले व्यञ्जन विविधि भांति के । जिमावन हित जमात के।

आप के साथ चलूंगी।

कर प्रसन्न सेवा से गुरु को मन माना वर लूंगी ॥

पूरनमल का

दो०—तङ्ग कराने का उन्हें, मेरो नहीं विचार।

नेकी करते नेक जन, बदी करें बदकार ॥

चौ०—बदी करें बदकार बदी का बेशक फल पावेंगे।

सींच करील न बैठन को साया शीतल पावेंगे ॥

बे गुनाह बे जुर्म किसी बेकस को कत्ल पावेंगे।

है ये नियम न्याय निधि का नहीं वह भी कत्ल पावेंगे ॥

दो०—यही मगर तेरी इच्छा। गुरू ढिग ले चल भिच्छा ॥

भक्ति युत करना अरजी

हो कबूल या नहीं अनारी रही नाथ की मरजी ॥

कवि का

दो०—पूरनमल के बचन सुन, सुन्द्रादे सुकुमार।

आनन फानन में तलब, कीए खिदमतगार ॥

चौ०—खिदमतगार बुलाइ तयार सामान सकल करवाये।

खुजला खुरमा खस्ता मठरी और सुहार सुहाये ॥

मोहनभोग इमरती लड्डू उत्तम सरिस बनाये।

सुघड़ कचौरी पापड़ बढ़िया दाल सेव मन भाये ॥

आल्हा—बिबिध भांति की बनी मिठाई ताकी कुछ ना पै शुमार। बूंदी पेड़ा शक्करपारे बरफी गुझिया करें बहार॥सोंठ कचरिया सरस मुरब्बा कई किस्म के रखे अचार। साग पकते दही बड़ा शुचि लुचई और त्रिकोन सुहार॥ बहुत जल्द फुरती से करवायो रानी सामान तयार। सवा तीन सौ बंहगी वाले लीने नफ़र कहार पुकार॥ हुकम सुनायो तुरत फौज को साजे क्षत्री सात हजार। रानी सुन्द्रादे उत महलन रचिपचि लगी करन सिंगार॥ किया उबटनो न्हाय धोय के काढ़ लिये कङ्घी से बार। अतर फुलेल डार केशन में लई मोम की पटियां पार॥

मांग सिंदूर भाल पर बिंदी नयनन डोरों सुरमा सार। खौरि बन्हनी बैना पहिनी नथ भलकारी लई सम्हार ॥ चमके चोंप रची मुख बीरी दांतन मिस्सी करत बहार। करनफूल झुरझुवी झूमका बाले बाली बुन्दे डार ॥ गुलोबन्द पचमनियाँ माला चम्पकली हँसली श्रोर हार। बाजू बरा नौनगा जोशन छन कङ्कन की अजब बहार ॥ छल्ली उँगरियाँ छल्ला मुदरियाँ कनक आरसी जटित किनार। हाथन मँहदी हरी २ चुरियाँ गोरी २ बैयाँ सुघड़ सुढार ॥ झब्बेदार कौंधनी पहरी कटि में रही लपेटा मार। कड़े छड़े पाजेब तोड़िया पैरन झांझन की झनकार ॥ अनवट बिछुआ नहियाँ सांकर जिन की शोभा अधिक अपार। चटक चुँदरियाँ शिर पर ओढ़ा वायल गोट लगी इकसार ॥ घूमघूमारौ दामन पहनौ अँगियाँ पहनी बूँटेदार। सजि बजि त्यार खड़ी सुन्दराई उछल अस्व पर हुई सवार ॥ दूबे घोड़ा के ऊपर झट चढ़ा लिया पूरन सरदार। जित में पड़ी जमात नाथ की उत में चली बढ़ाय तुरङ्ग ॥ सात हजार फ़ौज और जाफ़त की सामग्री ताके सङ्ग ॥ यहाँ की बातें छाड़ यहाँ पर अब चेलन का सुनो बयान। बैठे जोगि जमात सकल मिल रहे खुशी से बिजिया छान ॥ पी पी भांग चरस की चिलमें फूंक मचायो धूंआ धार। करें चोल चपरा आपस में ताली देकर हँसे अपार ॥ आयो नशा भाँग माजे का सुरख होगये सब के नैन। लकड़-नाथ से अकड़नाथ तब हँस कर लागे ऐसे कैन ॥

अकड़नाथ का

दो०—बीरा लक्कड़नाथ तू, बड़ी अकल का खान।
हम सब के ऊपर तेरा, है भारी अहसान ॥

चौ०—है भारी अहसान अकलवर कोई न तेरी सानी।
खूब निकाली अकल दिया मरवा पूरन अभिमानी ॥
उस के रहते ख्वार फ़्वार थी हम सब की जिंदगानी।

झगड़ा मिटा वही कंटक था करता रोज़ कहानी ॥
दौ०—मगर एक सन्शय हमको। सुनाऊँ सच्ची तुम को ॥
चुम्त चालाक बड़ा है।
बच आया जिन्दा तो फिर वह झगड़ा करे खड़ा है ॥

लक्कड़नाथ का

दो०—अकड़नाथ भाई मेरे, छोड़ो रञ्ज मलाल।
ज़िंदा बच सक्ता न वह, है किस तरफ़ ख़याल ॥
चौ०—करते ऐसा ख्याल आप को है बिलकुल नादानी।
जीवत छोड़े नहीं सन्त को वो सुन्द्रादे रानी ॥
है खूँ रेज़ा सख़्त दिल पापिन रहम न दिल में लानी।
मरवा दिया होय कब का उस ने पूरनमल ज्ञानी ॥
दौ०—फ़िकर दिल से हटाइये। ख्याल भाई न लाइये ॥
चाल क्या चल सक्ता है।
रिन्दों के फन्दों से अब क्या सहज निकल सक्ता है ॥

कवि का

दो०—इधर इस तरह जोगिया, गप्पैं रहे उड़ाय।
सुन्द्रादे का तब तलक, लश्कर पहुँचा आय ॥

लक्कड़नाथ का

दो०—देखो २ तो अरे, जरा इधर कर ध्यान।
पूरब से आवे चला, ये कैसा तूफान ॥
थि०—देखो २ कर के ध्यान। भाई ये कैसा तूफ़ान।
यहाँ पर गया यकायक आन। उड़ती धूर २ धूर ॥

सोटानाथ का

थि०—तू तो हुआ नशे में चूर। जिस से उड़ती दीखे धूर ॥
कर के सोच फ़िकर सब दूर। बोलो राम २ राम ॥

बिलौटानाथ का

थि०—जावे राम नाम सब भूल। क्या तू रहा गधा सा फूल।
तुझ को अक़्ल न नामाकूल। होजा चुप चुप चुप ॥

लक्कड़नाथ का

थि०—मत कर गाली और गलौज। सारी भूल जाइगो मौज।
आई सुन्द्रादे की फ़ौज। यहां से भाग भाग भाग॥

भंगोटानाथ का

थि०—हैं हैं ऐ मेरे भगवान। ये क्या आफ़त पहुँची आन॥
घिर गए जङ्गल के दरम्यान। जावें प्रान प्रान प्रान॥

खिलौटानाथ का

थि०—भाई वह पूरन मक्कार। कह गया होगा मरती बार।
है यहां साधू तीन हज़ार। सब को मार मार मार॥

भंगोटानाथ का

थि०—बेशक पूरन ही का काम। दीना बतला भेद तमाम॥
अब नहीं बचै हमारा नाम। जावै जान जान जान॥

लक्कड़नाथ का

थि०—भागो २ करो न देर। करना ये बातें सब फेर॥ वरना
लेंह सिपाही घेर। देंगे मार मार मार॥

कवि का

दो०—चेला गोरखनाथ के, दहशत दिल में मान।
दण्ड कमण्डल छोड़ सब, भगे बचा कर जान॥

चौ०—भगे बचा कर जान पड़े रहे कूँडी और भङ्गोटा।
साफ़ी चिलम चीमटा झोली गुदड़ी कम्बल सोटा॥
डर के मारे कोई कोई तो फिरै वहीं पर लोटा।
निकल गया पेशाब गीग कितनों के गए लंगोटा॥
दौ०—बैठ रहा कोई खटके। कोई झाड़ी में सटके॥
चढ़ा ऊपर कोई बट के। कोई कूआ में लट के॥
खोह में छिपे सपट के।
पूरनमल से सखुन सुन्दरा कहने लगी दपट के॥

सुन्द्रादे का

दो०—पूरनमल तूने चलो, चाल हमारे सात।

कोई न दीखे यहां पर, बतला कहां जमात ॥

पूरनमल का

दो०—चाल न कुछ मैंने चली, कही ठीक ही बात ।
देख तुम्हारी फ़ौज को, छिप गई सकल जमात ॥
चौ०—छिप गई सकल जमात पहाड़ों की खोओं में जा के ।
थोड़ी देर पेश्तर यहां सब गये रहे उड़ा के ॥
अभी २ में ग़ायब होगये गुरु भाई डर खाके ।
फ़क़त रह गई कुटी गुरू की सो वह रही दिखाके ॥
दौ०—छुट गए छक्का सब के । झाड़ियों में जा दब के ॥
कौन मरने को आवै ।
जब तक यहां पर रहै फ़ौज नहीं सूरत कोई दिखावै ॥

कवि का

दो०—सुन कर पूरन के बचन, मन में गुस्सा आय ।
सुन्द्रादे ने फ़ौज को, दीना हुक्म सुनाय ॥

सुन्द्रादे का

दो०—सुनौ शूर सब ध्यान दे, करौ न पलकी देर ।
इस जङ्गल और खोह को, चौतरफ़ा लो घेर ॥
चौ०—चौतरफ़ा लो घेर फेर जाओ पहाड़ पर चढ़ के ।
जो कोई साधू मिलैं छिपा कहीं लाना उसे पकड़ के ॥
दाब धौंस से काम लेउ जो आवे पेश अकड़ के ।
'मारौ मती जान से कस लो मुश्कें खूब जकड़ के ॥
दौ०—ये जङ्गल देखो भालो । वक्त नाहक मत टालो ॥
खोज कर सबै निकालो ।
बाक़ी रहै न एक जोगिया तीन हजार सम्हालो ॥

कवि का

दो०—सुन्द्रादे का हुक्म सुन, तनक न कीनी देर ।
जङ्गल को चौतरफ़ से, लिया कटक ने घेर ॥
चौ०—लिया कटक ने घेर फेर इत उत को शूर सिधारे ।

छोड़ झाड़ियों से कुओं से साधू पकड़ निकारे ॥
बाकी छोड़ा एक न पूरे तीन हज़ार सम्हारे ।
गिरफ़्तार कर सब को ला रानी की नज़र गुज़ारे ॥
दो०—देख रानी साधुन को । बुलाया ढिग पूरन को ॥
ग़ज़ब गुस्सा कमाल कर ।
लगी डराने सन्तों को यों आंखें लाल लाल कर ॥
सुन्द्रादे का
दो०—क्या तुमको मालुम न था, जो है यहां का रूल ।
मेरे शहर की हद में, साधू रहे न भूल ॥
चौ०—साधू रहे न भूल भूल कर अगर कोई यहां आवे ।
बा क़ायदे हुकम सरकारी सर अपना कटवावे ॥
उसी मुताबिक तुम सबको अब क़त्ल कराया जावे।
तीन हजार जोगियों में से एक न बचने पावे ॥
दो०—यही इरशाद हमारा । होय सर क़लम तुम्हारा ॥
जो चाहो खिला पिला दें ।
जिससे मिलना चहो उसे फ़ौरन इस वक्त मिला दें ॥
सोटानाथ का
दो०—हम सब जोगी बे वतन, कीजे माफ़ हुजूर ।
हद आपकी में टिके, बेशक हुआ कसूर ॥
चौ०—बेशक हुआ कसूर जो हम सब आए चले इधर को ।
हम में से भिक्षा करने नहीं कोई गया शहर को ॥
फिर क्यों कर सरकार कराओ क़त्ल हमारे सरको ।
माफी दो हम चले जांय नहीं आवें नजर फ़जरको॥
दो०—छोड़ अब हमें दीजिये । न ज़्यादा तङ्ग कीजिये ॥
चले यहाँ से जावें हम ।
क़सम गुरूको इस जङ्गल में कभी न फिर आवें हम ॥
सुन्द्रादे का
दो०—मुजरिम हो के सरासर, झूंठ करो इज़हार ।

माफ़ी कभी न दूं तुम्हें, हो सब तुम मक्कार ॥

चौ०—हो भारी मक्कार झूठ इज़हार सुनाया तुम ने ।
किया जुर्म दर जुर्म खौफ दिल बीच न खाया तुमने ॥
दे ताना भिक्षा को पूरन सन्त पठाया तुम ने ।
जान सरासर अजल जाल वहाँ इसे पठाया तुम ने ॥

क०—दग़ा से सर कटाने को जिसे तुमने पठाया है । वही पूरन मए लश्कर लिवा यहां मुझको आया है ॥ शकल में शान में रफ़्तार में गुफ़्तार में यकता । एक दो की न दस की बात दल का दल बताया है ॥ आज परताप पूरन के बिना महनत परिश्रम के । इकट्ठे सर कटाने का ये मौका हाथ आया है ॥ फंसाना और को चाहा फंसे खुद आप फन्दे में । कज़ा का मौत का चक्कर सबों के सर पै छाया है ॥ जो खोदै और को कुआ उसी को त्यार हो खाई । किसी शायर ने कवि ने ठीक यह मिसरो बनाया है ॥ त्यार मरने को हो-जाओ कराऊं कलम सर सब का । बदी करने का ईश्वर ने मजा तुमको चखाया है ॥

कवि का

दो०—सुन्द्रादे के सुन सखुन, जोगी दहशत मान ।
करन लगे सब खुशामद, पूरन के ढिग आन ॥

जोगियों का

दो०—पूरनमल हम सबों पर, कर भारी अहसान ।
सुन्द्रादे खूंरेज से, बचा हमारी जान ॥

चौ०—है तेरे इख्त्यार सबों की जान बचादे भाई ।
इस ज़ालिम के फन्दे से आजाद करादे भाई ॥
कर मिन्नत पर ग़ौर क़ैद से हमें छुड़ादे भाई ।
खता हमारी का दिल से कुल खयाल हटादे भाई ॥

दो०—तेरे हम गुनहगार हैं । बिलाशक खतावार हैं ॥
ये महसां हम पर कीजे ।

करें न बदी तुम्हारे सङ्ग फिर अब तो छुड़वा दीजे ॥

पूरनमल का

दो०—कसर नहीं तुमने रखी, कुछ भी मेरे साथ ।
भेजा मरने को मुझे, मिल के कीनी घात ॥
चौ०—मिल के कीनी घात कहन का तान तमञ्चा मारा ।
गुरु भाई होकर के मेरे संग में कपट विचारा ॥
सुन्द्रादे के हाथ कटाना चाहा शीश हमारा ।
बच आया मैं साफ मनोरथ हुआ न सफल तुम्हारा ॥
क०—वही सुन्द्रा है ये जो कत्ल फौरन सर कराती थी ।
न जिन्दा छोड़ती थी सन्त को गर देख पाती थी ॥
गुरू दर्शन को अब वह ही मेरे हमराह आई है ।
सहित श्रद्धा जिमावन को विविध पकवान लाई है ॥
दौ०—न मन में दहशत खाओ । खुशी से भोजन पाओ ॥
न कुछ मैं तुमसा हूंगा ।
करो बदी चाहे जैसी तुम मैं नहीं दगा करूंगा ॥

कवि का

दो०—पूरनमल ने सबों को, करा दिया आजाद ।
चला पास फिर गुरू के, हो तबियत में शाद ॥
चौ०—हो तबियत में शाद साथ सुन्द्रादे को भी लीना ।
जहां थी कुटी नाथ की वहां प्रस्थान दोउन ने कीना ॥
पहुंच गुरू के पास शीश रख चरण कमल में दीना ।
बिसरा ध्यान तुरत गोरख का तरफ इन्हों की चीन्हा ॥
दौ०—निरखि चेला पूरन को । प्रफुल्लित कीया मन को ॥
साथ रानी को देखा ।
लगे पूंछने पूरनमल से कर दिल बीच परेखा ॥

गोरखनाथ का

दो०—पूरनमल यह कौन है, औरत तेरे साथ ।
क्यों आई मेरे कनें, बता बात सच तात ॥

पूरनमल का

दो०—शहर चीन की सुन्दरा, है यह श्री महाराज।
जाफ़त सकल जमात की, करना चाहे आज॥

गोरखनाथ का

दो०—क़तल कराये हजारों, साधू बिना कसूर।
जाफ़त इस कम्बख़त की, हमें नहीं मंजूर॥
चौ०—हमें नहीं मंजूर ज़ियाफ़त कोई न इसकी पावे।
कहदो इस हरामज़ादी से चली यहां से जावे॥
चांडाल पापिन हत्यारी शकल न मुझै दिखावे।
सुन २ इसका नाम गुजरती नफ़रत गुस्सा आवे॥
दौ०—साधुओं को मरवावे। रहम नहीं दिल में लावे॥
पाप करती अति भारी।
भोजन करें हाथ इसके का कभी न मुनि तपधारी॥

कवि का

दो०—क्रोधित गोरखनाथ को, लखि सुन्द्रा कर जोरि।
शीश नाइ कर चरण में, बोली बचन निहोर॥

सुन्द्रादे का

दो०—स्वामी मेरे से बना, बेशक भारी पाप।
हृदय मेरे को हो रहा, महा घोर संताप॥

चौ०—सन्ताप हो रहा स्वामी मेरे मनको। मैं आई हूं तुम चरणन के दरशन को॥ महाराज कृपा मो पापिन पर कीजे। प्रायश्चित हो मेरे पाप का अभय दान दीजे॥ मो दुर्मति से दुष्कर्म हुए प्रभु भारी। बिन ख़ता हजारों मरवाए तपधारी॥ महाराज याद कर पाऊं महा कलेश। होय बुरा उस पंडितका दीना जिन यह उपदेश॥ वह ज्योतिष विद्या पढ़ काशी से आया। उन मार्ग मुक्ति का स्वामी यही बताया॥ महाराज कही साधुन को मरवाओ। है युक्ती उत्तम सब से तुम शीघ्र मोक्ष पाओ॥ यह कहन ठीक यों पंडित जी की मानी॥

रवाये साधू करी बड़ी नादानी ॥ महाराज मिला नहिं अब क कोई महन्त । हटा कुमारग से दिखलाता जो प्रभु मुझे सुपन्थ ॥ बड़ भाग मेरा जो हुआ आपका आना । और पूरन भु मम ग्रह भिक्षा को जाना ॥ महाराज ले भिक्षा दूर किया अज्ञान । दरश कराया तुम चरणन का कर के कृपा महान ॥ अब क्षमा मेरा अपराध कीजिये स्वामी । सेवा अपनी में मुझे लीजिये स्वामी ॥ महाराज फूल फल भेट करो स्वीकार । कृपा आपकी से होवे प्रभु मेरा बेड़ा पार ॥

कवि का

दो०–सुन्द्रादे का प्रेम युत, भक्ती भाव निहार ।
स्वामी गोरखनाथ ने, करी भेट स्वीकार ॥

चौ०–करी भेट स्वीकार शिष्य चौदह सौ निकट बुलाए ।
जो थे गुप्त संत चौदह सौ सो भी सब प्रगटाए ॥
बिविधि भाँति पकवान चीन बासी आतुर ले आए ।
सहित जमात नाथ को सुन्द्रा भोजन रुचिर जिमाये ॥

दौ०–हुआ पूरा भण्डारा । करे सब जय २ कारा ॥
गुरू गोरख हरषाये ।
सुन्द्रादे रानी को खुश हो ऐसे बचन सुनाये ॥

गोरखनाथ का

दो०–सुन्द्रादे ऊपर तेरे, हुआ प्रसन्न महान ।
मन इच्छा पूरण करू, माँग १ बरदान ॥

क०–लखि भक्ति भाव तेरा, खुश हू अपार बेटी ।
क्या चाहती है बर तू, मुख से उचार बेटी ॥

सुन्द्रादे का

क०–काबिल न माँगने के, प्रभु ने किया है मुझको ।
धन धाम राज्य वैभव, सब कुछ दिया है मुझको ॥

गोरखनाथ का

क०–बेशक न माँगने के, काबिल किया है तुझको ।

लाजिम है कुछ न कुछ तो देना जरूर मुझको ॥

सुन्द्रादे का

क०—देना जरूर है तो, मांगू नहीं मिलै फिर।
दीजे बचन गुरूजी, हरगिज़ नहीं टलै फिर ॥

गोरखनाथ का

क०—दीना बचन गुरूजी, हरगिज़ नहीं टलैगा।
माँगैगी जो तू बेटी, फौरन वही मिलैगा ॥

सुन्द्रादे का

क०—दीना बचन गुरूजी, तो देर अब न कीजे।
निज शिष्य भक्त पूरन, बख़्शिश में मुझे दीजे ॥

गोरखनाथ का

क०—धोखा हमारे सङ्ग में, कीना कमाल तू ने।
जानो जिगर कलेजा, लीना निकाल तू ने ॥

सुन्द्रादे का

क०—कीनी प्रतिज्ञा जो कुछ, स्वामी उसे निभाओ।
मत मोह जाल में फँस, निज सत्य को डिगाओ ॥

गोरखनाथ का

दो०—बचन कभी टारूं नहीं, दीना पूरन तोय।
लेकिन इसके साथ में, अनुचित कार्य न होय ॥
चौ०—अनुचित कार्य न होय शिष्य मम बाल ब्रह्मचारी है
चलै न कभी कुमार्ग धर्म धारी है सत धारी है ॥
तू कामिन छल भरी मदन के मद में मतवारी है।
रखै किस तरह चेला को सन्देह यही भारी है ॥
दौ०—सुनें तू पूरन चेला। न कर अब जरा झमेला ॥
साथ रानी के जाओ।
नथाराम द्विज कहैं इसे उत्तम उपदेश सुनाओ ॥

पूरनमल का

दो०—जो कुछ आज्ञा नाथ की, है मुझको स्वीकार।
जाऊं इसके साथ मैं, करूं नहीं इनकार ॥

कवि का

दो०—सुन्द्रादे मन मगन हो, ले पूरन को साथ ।
चली आपने शहर को, मारग में बतरात ॥
दौ०—मारग में बतरात जात हँस २ कर मुसिकाती है ।
मारै बान तान चश्मों के रानी मदमाती है ॥
नाज़ अदा अन्दाज सन्त पूरन को दिखलाती है ।
कर छल फन्द अनेक जाल मनमथ का फैलाती है ॥
दौ०—महल अपने में आई । न फूली अङ्ग समाई ॥
जिगर की घुण्डी खोली ।
पकड़ हाथ में हाथ सखुन पूरन से ऐसे बोली ॥

सुन्द्रादे का

दो०—गोरख गुरु ने कर दिया, तुम्हें मेरे हमराह ।
अब तो भोगो राज सुख, हो कर शाहन्शाह ॥
दौ०—होकर शाहन्शाह चीन का राज करो बे खटके ।
बहुत रोज जञ्जाल जोग में जङ्गल २ भटके ॥
करो ऐश आराम यहां पर गुलन्दाम डट डट के ।
देखो दिलबर ज़रा इश्क़ बाज़ी के सुन्दर लटके ॥
दौ०—सनम नहीं देर कीजिये । मुझै ऋतु दान दीजिये ॥
घड़ी युग सम कटती है ।
किया मदन ने ज़ोर न तबियत डाटे से डटती है ॥

पूरनमल का

दो०—बस २ बस खामोश रह, रख ज़बान को थाम ।
हरगिज़ मेरे से नहीं, होगा ऐसा काम ॥
दौ०—होगा ऐसा काम न ये ज़िक्रश ज़बान पर लाना ।
गुलन्दाम फ़ेलो हराम का ज़िकर न मुझै सुनाना ।
काम हमारा है सब को मुक्ती का मार्ग बताना ।
जावें पार आप भव से औरों को पार लगाना ॥
दौ०—हुई रानी दीवानी । अक़ल कहां तेरी सुलानी ॥
काम के बस होता है ।

छाया देर सुख कारण अपना धर्म कर्म खोती है ॥

सुन्द्रादे का

दो०—तनक देर सुख के लिए, पावत कष्ट महान ।

तब मुश्किल से मिलत है, यह सुख रस की खान ॥

बहरत०—बड़ी मुश्किल से मिलता है ये सुख सनम, इस के आगे कोई सुख सुहाता नहीं । भाग्यशाली ही भोगे हैं इस भोग को, कोई बिन भोग आनन्द पाता नहीं ॥ भोग को जोगी करते हैं जप तप भजन, तू गले से मुझे क्यों लगाता नहीं।तेरी मिन्नत खुशामद करूं हूं सनम, तो भी दिल में मेरा रहम लाता नहीं ॥

पूरनमल का

बहरत०—कैसे लाऊँ रहम तेरा दिल में बता, ऐसा जिकरा मुझे अब सुहाता नहीं । मैं बताता हूं मारग तुझे मुक्ति का, सो समझ में तेरी कुछ भी आता नहीं ॥ भोग भोगें हैं भोगी न जोगी जती, भोग कर जोग अपना डिगाता नहीं । तू हुई काम के बस फंसे पाप में, तेरे संग में फंसा मुझ पै जाता नहीं ॥

सुन्द्रादे का

बहरत०—मैं तुम्हें मांग कर गुरु से लाई यहाँ, अब रहे कैसे जोगी बताओ सनम । तुमको करनी पड़े मेरी राजी सभी, मत बहाने की बातें बनाओ सनम ॥ दो पटक भाड़ में ऐसा ज्ञानो धरम, रस की बातें हमें बस सुनाओ सनम । चलो लेटो लिपट प्यार से सेज पर, मेरे दिल के दरद को मिटाओ सनम ॥

पूरनमल का

दो०—अच्छा २ समझली, मन तेरे की बात ।

सुन्द्रादे तुझ से मेरी, पार नहीं बसियात ॥

छं०—नहीं पार बसियावे मेरी रानी शरम की बात है ।

जोगी हूं मैं बस इस सबब तन मन मेरा घरात है ॥

कर नैन अपने बन्द तू इच्छा सकल पूरन करूं ।

मत हो दुखी मत हो दुखी मैं पीर सब तेरी हरूं ॥

कवि का

दो०-कीनी आँखें बन्द प्रिय, कहा सनम का मान।
पूरनमल झट वहां से, होगया अन्तर ध्यान॥

सो०-होकर अन्तर ध्यान, आया गुरु के पास में।
चेला को पहचान, बोले गोरखनाथ यों॥

गोरखनाथ का

दो०-सुन्द्रादे को दे दिया, मैंने तुझको दास।
छोड़ उसे क्यों आगया, फिर तू मेरे पास॥

चौ०-फिर तू मेरे पास चला आया नहीं कौल निभाया।
चाह तेरी में सुन्द्रादे ने भारी दुक्ख उठाया॥
जैसे तैसे मुश्किल से पूरनमल तुझको पाया।
रञ्ज जुदाई का फिर तूने चेला उसे दिखाया॥

क०-मुनासिब पास मेरे अब तुझे पूरन न आना था। वहां रह
र के सद उपदेश रानी को सुनाना था॥ हजारों जोगियों
ा क़त्ल करवाया आ कटवाए। ज्ञान शिक्षा दे सुन्द्रादे का
ख तुझको छुड़ाना था॥ वो तेरी चाह में दिलजान से मशगूल
हती थी। तसल्ली उसको समझा के तुझे बेटा बंधाना था॥

दौ०-रहम लाना अच्छा है। न कलपाना अच्छा है॥
किसी को कलपाओगे।
फल पाओ कलपाने का नहीं तुम भी कल पाओगे।

पूरनमल का

दो०-स्वामी अपनी टहल से, मुझ दास को निकाल।
सौंप अधरभिन को दिया, किस वबाल में डाल॥

चौ०-किस वबाल में डाल दिया नित आफ़त सहनी परती।
पाप कर्म से सुन्द्रादे गुरु तनक न मन में डरती॥
साथ हमारे विषय भोग की जिकर हमेशा करती।
सुन २ ये बातें रानी की नफ़रत मुझे गुजरती॥

क०-मुनासिब साथ ऐसी के नहीं मुझको पठाना था। बरस

कर दास अपने के कुमारग से बचाना था ।। जती था जन्म का महाराज कुछ तो ख़याल लाना था । कर दिया साथ पापिन के मुझे क्या आज़माना था ।। नसीहत बहुत कुछ की और दिया उपदेश दुर्मति के । रँगी वह रंग रतिपति के कहा मेरा न माना था ।। गुज़ारा था न वहां मेरा चला आया हूं दे धोका । न रह के पास रानी के धरम अपना डिगाना था ।।

दौ०—काम बस हुई दिवानी । नसीहत मेरी न मानी ।।
न हो वहां मेरी गुज़र है ।
सुन्द्रादे की गुरू तरफ़ मेरी के बुरी नज़र है ।।

गोरखनाथ का

दो०—पूरनमल तू ने कुमर, किया न अच्छा काम ।
धोखा रानी के दिया, होय बुरा अन्जाम ।।

चौ०—होय बुरा अन्जाम ख़याल मन सुन्द्रादे लावैगी ।
दगा बाज़ छलिया कपटी वह मुझको बतलावैगी ।।
तेरी जुदाई का दुख पाके रानी मरजावैगी ।
ज़िन्दी रहे अधर्मिन मर सन्तों का कटवावैगी ।।

दौ०—पास उस के ही जा तू । बिलम मत यहां लगा तू ।।
कष्ट उन भारी झेला ।
सुन्द्रादे मरजाय दोष लगजाय मुझे फिर चेला ।।

पूरनमल का

दो०—अगर तुम्हें मंजूर था, मुझे कराना भोग ।
तौ फिर स्वामी आपने, क्यों सिखलाया जोग ।।

चौ०—सिखलाया गुरु जोग पाप रानी मुझ से तकती है ।
जोश जवानी में दीवानी बे लिहाज़ बकती है ।।
ख़्वाहिश मेरे साथ वस्ल की सुन्द्रादे रखती है ।
नहीं दास से इच्छा उसकी पूरी हो सकती है ।।

छ०—नहीं गुरु कर्म है अपना ऐश अशरत उड़ाने का । काम

महाराज सन्तों को भजन में लौ लगाने का ॥ ध्यान हरि-नाम का धरना यही हर बार बतलाया । भोग करना न हम को आपने जिनहार बतलाया ॥ सितम है जोग छुड़वा भोग के फन्दे फंसाते हो । सुमारग से हटा स्वामी कुमारग में चलाते हो ॥

दो०—न जाऊँ वहां भूल मैं । करूं मरना कबूल मैं ॥
कृपा यह हम पर कीजै ।
यह आज्ञा महाराज दास अपने को आप न दीजै ॥

कवि का

दो०—पूरनमल गोरख दोऊ, रहे इधर बतराय ।
रानी सुन्द्रादे उधर, गिरी महल ग़श खाय ॥
सोरठा—बांदी झटपट आइ, लीनी उसे उठाय कर ।
इत्र गुलाब सुंघाइ, होश करा कहने लगी ॥

बांदी का

दो०—क्यों ग़श खा कर के गिरी, कहिये आप हुजूर ।
भरी आह उफ़ सरद क्यों, बिगड़ गया सब नूर ॥
चौ०—बिगड़ गया सब नूर रोशनी क्यों चहरे पर कम है ।
सूरत पर छागई कुदूरत क्या ग़म रञ्ज अलम है ॥
होश हवास न ठीक भरो सरकार आह दम २ है ।
क्या दिल दर्द जर्द रङ्ग होगया चश्म अश्क से नम है ॥
दो०—हाल दिल का बताइये । न बन्दी से छिपाइये ॥
हुई हालत ख़राब क्यों ।
किस बाइस रोती हो होती हो ग़मगीं जनाब क्यों ॥

सुन्द्रादे का

दो०—ऐ बांदी क्या बताऊं, दिल अपने का हाल ।
पूरनमल ग़ायब हुआ, दे कर मुझ को चाल ॥
चौ०—दे चाल पूरनमल मुझे यहां से रवाना होगया । अब मुझे दिलदार का दुश्वार पाना होगया ॥था यही कम्बख़्तके अब मुख़्त

बिन ग़ारत हुए। उम्मेद ही उम्मेद में उलटा ज़माना होगया॥ ये ख़्याल था मुतलक़ नहीं दिलजान हो मुझ से जुदा। ऐ मेरे भगवान यह कैसा फ़िसाना होगया॥ सोचती थी रात दिन गुज़रेंगे अशरत ऐश में। ऐश के बदले बहन आंसू बहाना होगया॥ जान बिन अब जान दूंगी ठान दिल दरम्यान की। बस ख़तम जग से मेरा अब आबदाना होगया॥

बांदी का

दो०—ग़रक़ इश्क़ में इस क़दर, हुईं आप सरकार।
जान गमाओ ख़ामख़ां, करो न ज़रा बिचार॥

दा०—सबर कर दिल दरम्यान भैना। प्यारी ठान न ऐसी ठानों, कहन सच मानो॥ बनो हो क्यों नादान भैना॥ सबर०॥ क्यों तू वृथा बिकल होती है। पड़ी रोती है॥ हुई ऐसी ख़फ़क़ान भैना॥ सबर० ॥ जोगी किस के सगे बतारी। हुए हैं प्यारी। काहे खोती हो जान भैना॥ सबर०॥ था जादूगर वह जाली। तुम्हें बहकाली॥ थी कब उस की पहचान भैना॥ सबर कर दिल दरम्यान भैना॥

सुन्द्रादे का

दा०-करूं मैं क्या तदबीर बाँदी। धोखा देके मुझे सिधारा। वो फूल हजारा॥ बना ऐसा बे पीर बाँदी॥ करूं॥ अब मैं कैसे मन समझाऊं। न उसको पाऊं॥मेरी ओछी तक़दीर बाँदी॥ करूं०॥ अच्छा नहीं उमर भर रोना। ज़हर खा सोना॥ यही बहतर शमशीर बाँदी॥ करूं०॥ आली सब झगड़े निबटाऊं। मैं जान गमाऊं॥ मार मल में तलवार बाँदी॥ करूं०।

बाँदी का

दो०—बैठ महल चुपचाप अब, मान हमारी बैन।
टलनी नहीं शुदनी अमर, लाख जतन कर भैन॥

भजन—अब कुछ जतन बनै न मेरी भैना। चाहै तजि दे प्रान खाय दे चाहै रो २ नैना॥ पूरनमल तो जन्म जती है भैन

तुम्हारे फंद फँसै ना ॥ अब० । जो कुछ लिखा भाग तेरे में ताहि कोई मेंट सकै ना । पूरनमल संग बड़ी न जूरी, कर तू लाख उपाय मिलै ना ॥ अब० ॥ अन्न खाउ जल पियो सार कुछ इन बातन में है ना । मन में धीरज धार बहन तू, प्राण तजै कोई काज सरै ना ॥ अब० ॥ सुन्दर सुघड़ हसीन कोई वर देख सहेली लेना । निर्मोही साधू के ऊपर, हरगिज मैना अपने प्राण न देना ॥ अब० ॥

सुन्द्रादे का

दा०—कैसे मानूं कहना बहना दिल को बँधे न मन्न करार । मैना बिन उस पूरनमल के दिल को सबर बँधै ना । मैना समझ सहेली सच अब मेरे प्राण बचैं ना हूं मरने को मैं तैयार ॥ कैसे मानूं कहना बहना० ॥

बाँदी का

दा०—मानो २ राज दुलारी क्यों तुम बनती हो नादान । ठानो ठान इस क़दर मैना बनो इश्क़ दीवानी । रानी रुसवा होय जहां में डाटो जोश जवानी ॥ क्यों बनती हो पागल खफ़कान । मानो० ॥

सुन्द्रादे का

दा०—अगर न मिलै मेरा हमदम, मरने में नहीं कसर है । मुझे नहीं डर रुसवाई का रखा हथेली सर है ॥ अब क्या जीने में है सार ॥ कैसे० ॥

बाँदी का

दादरा—सुन्द्रादे अब मिलै न पूरन बेशक प्राण गमादे । ना दे कोई मलाई आली दिल से ख़्याल हटादे ॥ रुसवा होय जहां दरम्यान ॥ मानो० ॥

सुन्द्रादे का

दादरा—जानै गति घायल की घायल दीगर क्या पहचाने । तानें दे दे कर तू मुझ को बांदी लगी खिझाने ॥ तेरा कहना है बेकार ॥ कैसे० ॥

बाँदी का

बहरत०—हो दिवानी जवानी में रानी मेरी; ऐसी ठानी कि जिस का ठिकाना नहीं। मानो मेरी कही ना अमानो बनो, रुसवा दुनियां में अच्छा कराना नहीं ॥ चाहे फ़जीहत करो जा से मैना मरो, ऐसी बातों में कुछ हाथ आना नहीं। जो गया सो गया अब वो आकर यहां, तेरे रंजो अलम को मिटाना नहीं ॥

सुन्द्रादे का

बहरत०—जो वो आया नहीं तो ठिकाना नहीं, जां गमा दूंगी झूठा बहाना नहीं। रहूं ज़िन्दी तो भारी मुसीबत सहूं, मुझे दुनियां हंसाई कराना नहीं ॥ तू तो कहती है मेरे भले की बहन, लेकिन माने है ये दिल दिवाना नहीं। दिल की मानूं तो होवे फ़जीहत मेरा, माऊं सुख नींद ऊके जमाना नहीं ॥

कवि का

दो०—सुन्द्रादे की मात सुन, ग़म की भरी पुकार ।
आ बेटी के पास यों, करन लगी गुफ़तार ॥

माता का

दो०—क्या ग़म रंज सवार है, सुन्द्रादे सुकुमार ।
हालत तेरी निहार के, छूटा सब्र क़रार ॥
चौ०—छूटा सब्र क़रार फ़िकर मेरे दिल को भारी है ।
रौनक बदन तेरे की बेटी बिगड़ गई सारी है ॥
हुआ जर्द रङ्ग चहरे का उफ़ आह सर्द जारी है ।
कहदे दिल का हाल लगी क्या तुझको बीमारी है ॥
दौ०—तेरी हालत खराब है। न तन में ज़रा ताब है ॥
हाल सब मुझे बतारी ।
कब से और किस सबब लगी क्या बीमारी सुकुमारी ॥

सुन्द्रादे का

दो०—क्या बतलाऊं मैं तुझे, अपने दिल का हाल ।
चन्द रोज़ में लग गया, मुझे इश्क जञ्जाल॥

चौ० लगा इश्क़ अजाब मात अहवाल सुनाऊं सारा।
स्यालकोट नृप का है सुत पूरनमल फूल हजारा॥
उस रुख अनवर शम्श क़मर से एक दिन हुआ नज़ारा।
फँसी इश्क़ के फन्द उसी पर है दिल फ़िदा हमारा॥

क़०—देख उस गुल को फ़िसाना होगया। दिल मेरा बुलबुल दिवाना होगया॥ दिल दिया दिलबर किया दिल से उसे। दिल में दिलबर का ठिकाना होगया॥ वर चुकी उस का परन ये कर चुकी। ध्यान प्रीतम से लगाना होगया॥ ये खबर पाई कि पति जोगी हुए। बस तभी से दुख उठाना होगया॥ क़त्ल करवाये जो कपटी सन्त थे।एक दिन उन का भी आना होगया॥ मांग गोरखनाथ से लाई महल। क़स्द दिल हसरत मिटाना होगया॥ चन्द दिन यहां पर रहा परन सनम। हा यकायक ही रवाना होगया॥एक उस गुल के बिना बाग़े जहां। है खिज़ां पुनो ज़माना होगया॥ मुझ मरीज़े इश्क़ का मादर मेरी। बस खतम अब आबदाना होगया॥

माता का

दो०—अरे डाकिनी तनक सी, करै गज़ब की बात।
दीवानी हो इश्क़ में, बकै न ग़ैरत खात॥

ला०लं०—करती बद गुफ़्तार खौफ़ बदनामी का नहीं खाती है। इतराती है उड़ी बे पर अम्बर को जाती है॥ कहती कुफ़्र कलाम मेरे आगे तू नहीं शरमाती है। बौरानी है सुनाती मुझ को इश्क़ कहानी है॥ न कुछ अक्ल में तुझे अनोखी बेहा चढ़ी जवानी है। मस्तानी है भिखमङ्गा पर होगई दिवानी है॥ हया शरम को छोड़ साधुओं का हा कन्थ बनाती है॥ इतराती०॥

सुन्द्रादे का

ला०लं०—आँखों में तसबीर उसी पूरनमल की लहराती है। समझाती ये नसीहत मुझ को नहीं सुहाती है॥ बिन उस हम-दम शम्श क़मर के बंधे न दिल को सब्र क़रार। नज़र न

आवे सब तरफ़ देखूं उसे निहार निहार ॥ ग़मे जुदाई में दी- वानी बना गया मुझ को दिलदार । हया शरम का न मादर मुतलक दिल में किया विचार ॥ है वह स्यालकोट नृप का सुत जोगी जिसे बताती है ॥ समझाती० ॥

माता का

दो०—अरे छोकड़ी तनक सी, करती बद गुफ़्तार ।
दिल दीना भिखमंगा को, सब कुल कान बिसार ॥

बहरत० ऐ तनक सी अभी से गुज़ब ग़ज़ब, क्वारेपन में ही दिल को फंसाया तैने । तू जवानी में ऐसी दिवानी हुई, नीच जोगी को हमदम बनाया तैने ॥ अब दई डोब मां बाप की सब शरम, औ बुज़ुर्गों को बट्टा लगाया तैने । हुई पैदा तू ऐसी मेरे बेहया, हा ज़माने में रुसवा कराया तैने ॥

सुंदरादे का

बहरत०—ऐरी मादर तू जिस को कहै भिखमंगा, तुझे उस के वतन की खबर ही नहीं । वो है राजा का सुत ब्रह्मचारी जती, उस बशर की तू जानें क़दर ही नहीं ॥ मैंने देखे हैं लाखों ही नर नौजवां, आया ऐसा हसीं कोई नज़र ही नहीं । जब से हमदम हमारा दग़ा दे गया, तब से होता है दिल को सबर ही नहीं ॥

माता का

बहरत०—मुझ बड़ी बूढ़ी का भी न करती अदब, बेहयाई से हा पेश आने लगी । ओ तनकसी अभी से करै है सितम, तू दुपहरी में तारे खिलाने लगी ॥ वे खतर शर्म सारी रखी ताक में, और अंगूठे पै मुझ को खिलाने लगी । मेरे आगे तू बकने लगी बे परद, और चिरा चुटकियों से उड़ाने लगी ॥

सुंद्रादे का

बहरत०—मेरी रग २ में वह माहरू रम रहा, ना हटै एक भी पल को दिल से सनम । उस की चाहत में मैया मैं मशगूल हूं, मुझे रुसवा बुराई का मुतलक़ न ग़म ॥ जो मिलैगा मुझे मेरा प्यारा

नहीं तो गले पे चलाऊंगी तेगे दुदम। बिना पूरन के पूरन करूं जिन्दगी, अम्मां तेरी कसम अम्मां तेरी कसम ॥

माता का

दरत०—तू नसीहत सुने ना फजीहत करै, अब तुझे सैर इसकी दिखादूंगी मैं। क्या जवानी में ऐसी दिवानी हुई, सब नशा ना ठण्डा करादूंगी मैं। दूं उड़ा खाल बेंतों से सारी तेरी, जो चाहत का तुझको चखा दूंगी मैं। सब मुहब्बत की बातें भुला दूंगी मैं, बेहया तेरे सर को उड़ा दूंगी मैं ॥

सुन्द्रादे का

दरत०—ले ले तेगे दुदम सर को करदे कलम, रहना जिन्दा मुझे भी गवारा नहीं। जब निकल हाथ से गुल हजारा गया, दिले बुलबुल का हो फिर गुजारा नहीं ॥ मैं तो मरने को खुद देख तैयार हूं, मैया धमकाना वाजिब तुम्हारा नहीं। मुझे मारेगी या खुद ही मर जाउंगी, जो मिलैगा वो हमदम हमारा नहीं ॥

———:०:———

द्वितीय मंजिल प्रारम्भ।

कवि का

दो०—सुन्द्रादे ने मात की, एक न मानी बात।
पूरनमल की याद में, घरणि पछारें खात ॥

०—खाती पछारें धरणि पर मन में रही घबराय के। गरमी कर के बहाना पहुंची वो ऊपर जाय के॥जीने की तजि उम्मेद ने की जिगर में ठान के। ऊपर महल से गिरी आंगन में पड़ी आन के॥ लखि मृतक सुन्द्रा को महल में रुदन सबी मचा। महाराज गोरखनाथ उत निज शिष्य को समझा रहे ॥

गोरखनाथ का

दो०—शौहरत हो रही शहर में, पूरनमल सुज्ञान।
तेरी जुदाई में तजे, सुन्द्रादे ने प्रान ॥

—तजि प्राण सुन्द्रादे दिये तेरी जुदाई में कुमर। मरती न यह नारि जब रहता वहीं पर तू अगर ॥ यह पाप अति तुझ

को बना तू शिष्य इतना काम कर। उद्धार हो तेरा अभी बेटा तू तीरथ धाम कर ॥ दे २ के सद् उपदेश कर सन्सार का उपकार तू। जाना वतन अपने को भी रहना मगर हुशियार तू॥ माता पिता तेरे विकल हैं धीर उनको दीजियो। छूकर चरण कर दण्डवत जीवन सफल निज कीजियो॥ हो यश तेरा सन्सार में सुत कर दिया तुझको अमर। रहना भजन में मगन चेला विचरना निर्भय निडर॥

पूरनमल का

दो०—जो कुछ आज्ञा आप की, है मुझको मंजूर।
तीर्थ यात्रा करन को, जाऊँ गुरू जरूर॥

छं०—भेजो जहां मुझको गुरू, बेशक वहीं मैं जाऊंगा।
स्वामी तुम्हारे पद कमल के फिर दरश कहां पाऊंगा॥
कर तीर्थ जा माता पिता अपने के कष्ट छुड़ाऊंगा।
दीजै पता अपना बता स्वामी वहीं आ जाऊँगा॥

गोरखनाथ का

दो०—तीरथ राज प्रयाग को, यहां से करें पयान।
आना निस्सन्देह वहां, पूरनमल सुज्ञान॥

कवि का

दो०—पूरनमल वहां से चला, किये तीर्थ स्नान।
घूमत २ गया वह, स्यालकोट दरम्यान॥

चौ०—स्यालकोट दरम्यान जाय बस्ती को खूब निहारा।
बाग़ नौलखा में आ फिर पूरन ने डेरा डारा॥
सूखा चमन पड़ा मुद्दत से हरा हो गया सारा।
काग चील चिमगादड़ उल्लू सब कर गये किनारा॥

क०—कृपा गुरु की से पूरनमल ने ये चेटक दिखाया है। जरा सी देर में वीरान को गुलशन बनाया है॥ शजर सूखे पड़े थे कुछ न था वहां नाम सब्ज़ी का। समर गुल बर्ग सब टहनी हरा कर के खिलाया है॥ जहां उल्लू व चीलों के भयानक

शब्द होते थे। वहां तोता व कोयल आदि की कलरव कराया है॥ बने थे घोंसला चिमगादड़ों कागों के डालों पर। कोयलों ने उन्हीं डालों पे अपना घर बनाया है॥ पड़े थे खार हर तरफ़ वे व पड़ो रोस के अन्दर। सब्ज़ मखमल का मोया फ़र्श अब वहां पर बिछाया है॥

दो०—खुशी माली को छाई। सुबह डाली सजवाई॥
निकट जोगी के आया।
रख डाली कर जोर सखुन माली महताब सुनाया॥

महताब का

दो०—दरशन कर प्रभु आपके, मिट गए सकल विकार।
मुद्दत का सूखा हुआ, किया चमन गुलज़ार॥

चौ०—किया चमन गुलज़ार आपने अपनी महर नज़र से।
हरे भरे गुल खिले अजब फल फूले फले शजर से॥
करामत भरे सिद्ध हो पूरे आना हुआ किधर से।
दीजे आसन डाल यहां लौ लगा गवरि शङ्कर से॥

दो०—अजब चेटक दिखलाया। चमन गुलज़ार बनाया॥
आप ही सत गुरु स्वामी।
शौकत शान शकल पूरनमल को सी अन्तरयामी॥

पूरनमल का

दो०—माली के ये क्या करे, बेहूदी गुफ़्तार।
को पूरनमल कहां रहै, बक २ न कर गंवार॥

चौ०—बक २ न कर गँवार करे ये बातें बे मतलब है।
हम जोगी अवधूत रहैं रमते क्या करे ग़ज़ब है॥
किस का था यह चमन सूख गया इसका कौन सबब है।
हरा भरा होगया अभी ये क्या माज़रा अजब है॥

दो०—ध्यान सत गुरु का धरते। हर जगह फिरें विचरते॥
लोभ ममता तजि मन से।

करें भजन सच्चिदानन्द का हो निधरक बन्धन से ॥

माली का

दो०—माफ़ करो मेरी खता, योगी जी महाराज ।
बेशक पूरे सन्त हो, आप ग़रीब निवाज़ ॥

चौ०—आप ग़रीब निवाज ख़्याल टुक मेरी बात पर लायें ।
शङ्खपती नृप गुलशन के मालिक महाराज कहायें ॥
था पूरनमल जती पुत्र उन का मशहूर जहां में ।
मरवा दिया लिया शिर अपयश भूपति इस दुनियां में ॥

क०—बुढ़ापे में बरी दूजी त्रिया नृप ने न मानी थी । आप कमजोर थे रानी जवानी में दिवानी थी ॥ भेज दासी को दे धोखा महल पूरन बुलाया था ॥ वस्ल चाहा था रानो ने न उसने मन डिगाया था ॥ तो जल कर पापिनी ने पुत्र को पातक लगाया था । जती था ब्रह्मचारी था सो व्यभिचारी बनाया था ॥ महीपति को बुला महलों में अपना रङ्ग चढ़ा कर के । करा के क़त्ल पूरन का निशां दीना मिटा कर के ॥ हमारा यार था जिसको ख़्याल उसका हो आया है । आप की शान शौक़त देख कर सन्देह छाया है ॥ ये था गुलज़ार गुलशन होगया बरबाद बस तब से । क़दम आये तुम्हारे प्रभु हुआ आबाद बस तब से ॥

पूरनमल का

दो०—सुत अपना मरवा दिया, कहा नारि का मान ।
हम ऐसे के नगर में, करें नहीं जल पान ॥

चौ०—करें नहीं जलपान नाम नृप के से घबराते हैं ।
नगर अधर्मी के में हम नहिं खाने को खाते हैं ॥
हरा हुआ किस सबब चमन अफ़सोस बड़ा लाते हैं ।
तोहमत लगे ख़ामख़ा को हम अभी चले जाते हैं ॥

क०—बिचरते हर जगह गोबिंद का नित ध्यान धरते हैं । कन्द फल मूल खाकर के यहां गुज़रान करते हैं ॥ विषय भोगों से

मन को खींच कर तृष्णा को कर बस में। क्षमा मन धारि सच बोलें बुरे कर्मों से डरते हैं ॥ ऐशो अशरत जो हैं जग में समझ मिथ्या रखे हमने। रहैं निर्भय न हम संसार के बन्धन में परते हैं ॥

माली का

दो०—श्रवण बिनय मेरो धरो, कहूं दोऊ कर जोर।
जाओ यहां बिराज प्रभु, मानों मोर निहोर ॥
चौ०—मानों मोर निहोर यहां आसन महाराज लगाओ।
करूं टहल तुम चरणों की हित चित से कहीं न जाओ ॥
लाऊं नृप को बोल उन्हें प्रभु सद उपदेश सुनाओ।
हरो तिमिर अज्ञान ज्ञान रूपी रवि कमल खिलाओ ॥
दौ०—अनुग्रह स्वामी कीजे। दरश भूपति को दीजे ॥
दुखिन के क्लेश मिटाओ।
घोर शोक में डूब रहे नृप उन को आप बचाओ ॥

पूरनमल का

दो०—माली तेरे बचन को, किया मैंने मंजूर।
मालिक अपने को यहां, ला तू बोल जरूर ॥
चौ०—ला तू बोल जरूर ज्ञान हम उस को समझावेंगे।
मैंटे सकल बिकार मुक्ति का मारग बतलावेंगे ॥
तेरे कहने से इक दो दिन यहां ठहर जावेंगे।
जावेंगे फिर प्रागराज औ गङ्गा जी न्हावेंगे ॥
क०—काम सन्तों का है माली भजन में लौ लगाने का। धर्म शुभ कर्म तीरथ धाम कर आयू बिताने का ॥ जो फँस माया के बस ग़ाफ़िल हैं दुनियांदार दुनियां में। फ़र्ज़ है ज्ञान शिक्षा दे चेत उन को कराने का ॥ मोह मद में जो अन्धे हो भटकते हैं कुमारग में। लगा कर ज्ञान का अञ्जन स्वर्ग उन को दिखाने का ॥

कवि का

दो०—सुन कर पूरन के बचन, माली मन हरषाय।

पहुँच कचहरी नृपति से, बोला शीश नवाय ॥

माली का

दो०—शीश नवा बिनती करूं, राजन पति महाराज ।
साधू एक अजमत भरा, आया स्वामी आज ॥

छं०—आते ही उस के महीपति गुलजार गुलशन होगया ।
नहीं खिजां का नामो निशां छबिदार गुलशन होगया ॥
हैं शील सागर सन्त जी गुण पुञ्ज सुघड़ स्वरूप हैं ।
तप तेज मुख पर शांति नम्र स्वभाव छवी अनूप हैं ॥
कर खुशामद बैठाल गुलशन में उन्हें धाया हूं मैं ।
चल कर करो दरशन बुलाने आप को आया हूं मैं ॥

कवि का

दो०—माली के सुन कर वचन, शङ्खपती भूपाल ।
ले कर सब को साथ में, गए चमन ततकाल ॥

चौ०—गए चमन ततकाल नृपति के हर्ष हृदय में छाया ।
नहीं खिजां का नाम नजर गुलजार गुलिस्तां आया ॥
तख़्ते पट्टी रौस साफ सुथरी गो अमी बनाया ॥
बैठा देखि सन्त जी को चरणों में शीश नवाया ॥

दो०—जोर कर सन्मुख जाके । बैठि गए नृप हरषा के ॥
भक्ति श्रद्धा उर छाई ।
अति निहोर कर भूपति ने जोगी को गिरा सुनाई ॥

शङ्खपति का

दो०—चरण परस विनती करूं, योगराज सुखकन्द ।
दर्शन कर प्रभु आप के, हुये सर्व आनन्द ॥

छं०—सूखा चमन कीना हरा सतगुरु हो परे सन्त ह
विपता हरी मो दास की मेरे लिए भगवन्त हो ॥ आराम
विश्राम स्वामी बाग मेरे कीजिये । धन धाम भोजन वस्त्र
इच्छा हो यहां से लीजिये ॥ मन क्रम बचन से आप की से
करूं मैं निश दिना । तुम चरण रज को शीश निज स्वामी

निशि छिना ॥ किस के हो बेटा शिष्य किन के और कहां
स्थान है । कब से औ किस कारण लगा स्वामी तुम्हें ये ज्ञान है॥

पूरनमल का

दो०—जोगी होते बे वतन, कहीं न उन का ग्राम ।
जिस जा तबियत लग गई, कर दिया वहीं मुकाम॥

चौ०—कर दिया वहीं मुकाम जक्त में नहीं किसी से नाता ।
राजपाट धन धाम कुटुम सब झूंठा नृपति दिखाता ॥
माया के बस हो प्राणी अपना अपना बतलाता ।
जिस तन पर अभिमान करै वह भी तो साथ न जाता॥

क०—इसी से छोड़ सब झगड़ा भजन ईश्वर का करते हैं ।
त्यागि संसार बंधन को स्वेच्छा से बिचरते हैं ॥ समझ कर
रूक रस षटरस सबै सम दृष्टि से देखें । न कुछ धन धाम की
इच्छा उदर भिक्षा से भरते हैं ॥ भोग को रोग सम जानें बसन
भूष धार आभूषण । महीपों के ये प्यारे सन्त इन से मन में
डरते हैं ॥ योग पदवी छिपा कर के जो जग में जन्म लेते हैं ।
वही होते हैं भूपति चक्र माया के में परते हैं । इसी कारण से
राजन बिलक्षण योग की पदवी । बिना धारण किये इस
। न भव सागर से तरते हैं ॥

चौ०—परम पद पंथ सुहावन । योग पदवी मन भावन ॥
यही निगमागम गावें ।
मनक्रम वचन सुश्रूषा कर भव आवागवन मिटावें ॥

शंखपति का

दो०—स्वामी सांची आप की, परमारथ में प्रीति ।
सत्य कठिन है योग पद, गूढ़ ज्ञान गोतीत ॥

—गूढ़ ज्ञान गोतीत यथारथ यही योग के लक्षण ।
सुगम रीति से राज योग पदवी का किया निरीक्षण ॥

त्राहिमाम योगेश आप की पुनि २ करें प्रदच्छण ।
तुच्छ बुद्धि स्वामी हम जानें किमि तुम ज्ञान बिलच्छण॥
दो०—आप प्रभु अन्तर्यामी । सिद्ध सत् गुरु हो स्वामी ॥
मेरो सन्ताप मिटायो ।
सूखो चमन आपने निज अजमत से हरो बनायो ॥

पूरनमल का

दो०—क्यों ये गुलशन आप का, सूख गया भूपाल ।
कौन कष्ट तुम को कहो, अपने दिल का हाल ॥

शंखपति का

दो०—सबब बताने में प्रभो, पाउं दुक्ख अगाध ।
योगी जी मुझ दास से, हना बड़ा अपराध ।
छं०—अपराध अति हम से हुआ होता न मुझसे ब्यान जी । रानी के छल में आन के मैं बन गया अज्ञान जी ॥ प्राणों से प्यारा पुत्र पूरनमल दियो मरवाय के । बस तभी से गुलशन गया महाराज ये मुरझाय के ॥ निर्दोष था ज्ञानी था सुत मैं कहूं निश्चय आप से।बिन कुँवर पूरन के जलै निशि दिन जिगर संतापसे।

पूरनमल का

दो०—क्या होता अब ग़म किए, मन में तनक बिचार ।
पैदा सो ना पैद हो, है जग का व्यवहार ॥

शंखपति का

दो०—जिगर मेरे को सन्तजी, बंधे न सब्र करार ।
होता है कुछ भ्रम मुझै, स्वामी तुम्हें निहार॥
छन्द—देखा है जब से आपको सन्देह है स्वामी मुझै । होता नहीं दिल को सबर प्रभु रंज है भारी मुझै ॥ पूरन से मिलती हुई सब स्वामी तुम्हारी शान है । चितवन हँसन तनकी गठन वैसी ही छवि मुसकान है ।। दीजे मिटा भ्रम सन्त जी कीजै इना-यत की नजर । वीसों बिसे पूरन ही तुम कर दिये काई ने अमर॥

पूरनमल का।

दो०—अचरज की सी बात तुम, करते हो भूपाल।
मर के को जिंदा हुआ, है किस तरफ़ ख्याल॥

छन्द—मरवा दिया तुमने जिसे वह जी सके किस तौर से।
क्यों मोह वस अन्धे हुए सोचो नृपति टुक गौर से॥
पहले दिया मरवाय सुत भूपाल अब रोते हो क्यों।
बैठो सबर कर जिगर में अश्कों से मुंह धोते हो क्यों॥

अश्वपति का

ग़०—माया है ईश्वर की प्रबल पाता न कोई पार प्रभु। उत्पति करें जग को वही पल में करें संहार प्रभु॥ उस विश्वपति श्री विश्नु की माया निराली है सभी। स्वाधीन है आधीन है उसके ही सब सन्सार प्रभु॥ चाहै जिसे राजा करें चाहै जिसे रंक कर। चाहै जिसे मारे जिलावे उसी के अधिकार प्रभु॥ जब रेणुका माता का कीना क्रोध वश हो परशुराम। यमदग्नि द्वारा जिलाया उसके लिये दो बार प्रभु॥ हरिश्चन्द सतधारी का सुत लिया नाग ने डस मर गया। जिंदा हुआ रोहिताश्व भी मन में तो करो विचार प्रभु॥ श्रीकृष्ण ने अपने गुरू के पुत्र को दीना जिला। नृप मोरध्वज ने सत्य हित हनि दयो रतन-कुमार प्रभु॥ महाराज वह भी जी पड़ा घटना हैं ऐसी बहुत सी। पूरन ही तुम वोसी जिसे मानूं न कहो हजार प्रभु॥

पूरनमल का

ग़०—क्यों हो रहे बेहोश ऐसे होश में आओ नृपति। अवधूत जोगी को न अपना पुत्र बतलाओ नृपति॥ जो ईश ने क़ायम किये हैं नियम इस सन्सार के। विपरीत उसके हो न सक्ता दुक्ख क्यों पाओ नृपति॥ जी अमर देह अनित्य मानों सत्य मेरी कहन को। मुर्दा न जिन्दा हो सके क्यों चित्त भटकाओ नृपति॥ कीजै मिटा भ्रम सब बुला बस्ती के बाशिंदा सकल। पूरन हूं या मैं संत हूं पहचान करवाओ नृपति॥

कवि का

दो०—योगी के सुन कर बचन, खुशी हुए सुलतान ।
कहन लगे इस तौर से, बुला पास दीवान ॥

शंखपति का

दो०—तनक न करौ अबार तुम, रूपेशाः दीवान ।
वाशिंदे सब शहर के, इकठे हों यहां आन ॥

कवि का

दो०—आज्ञा पा दीवान झट, गया शहर दरम्यान ।
कोतवाल को बुला के, समझाया कुल ब्यान॥

क०—दरोगा ने शहर सारे में ये इतला करादी है । चलौ सब बाग़ को नर नारि पिटवादी सुनादी है ॥ महल में जाके फूलन्दे व अम्वादे को समझाके । दोऊ बेठार डोलों में दईं गुलशन को भिजवाके ॥ हजारों नारि नर खुश हो चले बस्ती से आते हैं । दरश करते हैं साधू के चरण में सर झुकाते हैं ॥ धूम भारी हुई गुलशन में सब हल्ला मचाते हैं । तो कर ख़ामोश सब को सखुन पूरनमल सुनाते हैं ॥

पूरनमल का

दो०—जो इस दम मौजूद हैं, छोटे बड़े तमाम ।
होकर के ख़ामोश सब, बैठौ बा आराम ॥

ला०—बैठो सुख से भाई मत धूम मचाओ । क्यों धक्का धक्की कर तकलीफ उठाओ ॥ ऐ भाईयों सुनौ अब सकल लगा कर कान । साधू हूं था पूरनमल हूं करौ मेरी पहचान ॥ यह नृपति तुम्हारा पूरन मुझे बतावै । मर कर को जिंदा हुआ इन्हें समझावै ॥ ऐ भाइयों नृपति माया बस है अज्ञान । क्या कीनी पहचान कहो जी रूपेशा दीवान ॥

रूपेशाः दीवान का

ला०—जो की मैंने पहचान सो अभी बताऊं । अपने मन की

तुम से नहीं बात छिपाऊं ।। महाराज कुंवर पूरन की शौकत शान । मिलती है आप से सकल सूरत मूरत मुसकान ।। कुल कते वजह रंग ढङ्ग और चाल तुम्हारी । तन गठन हंसन चितवन बोलो अति प्यारी ।। महाराज चिबुक पर ऐसा ही ठीक निशान। किये किसी ने अमर तुम्हीं पूरन हो की पहचान ।।

पूरनमल का

ला०—मालिक से क्यों दीवान खिलाफ़ कहोगे । जो कहा नृपति ने वह ही आप कहोगे ।। दीवान आपने की झूंठी पहचान । मरवा दिया पुत्र को क्यों भूपति ने करिये ध्यान ।। तस्कर था या कामी कपटी व्यभिचारी । क्या करी खता दो बता हकीकत सारी ।। दीवान रहे सब उसे नेक बतलाइ । फिर कामलां पुत्र को दीना क्यों नृप ने मरवाइ ।।

दीवान का

दो०—स्वामी बीती दास्तां, मत कहवाओ आप ।
अन्तरयामी हो प्रभू, मेंटो सब सन्ताप ।।

पूरनमल का

दो०—जो तुम को मालूम हो, कह दो सच दीवान ।
दोषी और निर्दोष की, करूं अभी पहचान ।।

दीवान का

दो०—अगर आप की सन्त जी, इसी तरह है राय ।
तो मैं सारी कैफ़ियत, दूं आप को सुनाय ।।

क०—कुमर भूपाल का पूरन निहायत धर्म धोरी था ।। नेक नीयत था ज्ञानी था जती था बृह्मचारी था ।। एक दिन ख़त महीपति पर बड़े उत्साह का आया । ज़िकर जिस में लिखा इक नृप सुता के ब्याह का आया ।। गए भूपति स्वयम्बर को ब्याहि दूजी त्रिया लाये । एक घर के नई रानी ने दो आते ही करवाये ।। लिया बुलवा कुंवर पूरन को उस ने महल बांदी से।

पूछिये पता आगे का लगेगा सहज वांदी से ॥

पूरनमल का

दो०—फूलन्दे और कुंवर से, महलों के दरम्यान ।
कथा गुजरी थी दास्तां, कर अनुचरी बयान ॥

बांदी का

दो०—जो सच २ पूछो मुझे, योगी जी महाराज ।
तो मैं बीता हाल सब, कहूं आप से आज ॥

ला०—एक दिन सिंगार कर ये फूलन्दे रानी। रही झांक झरोखन से इत उत दीवानी ॥ महाराज उधर से पूरनमल सरदार। जाते थे बाग को लिया रानी ने उन्हें निहार ॥ देख कर शान शौकत सुधि बुधि बिसरानी। मुश्ताक हुई बेटे पर गे मस्तानी ॥ महाराज मैंने समझाई थी हरचन्द। कहन मेरी सन्तजी न इन को आई जरा पसन्द ॥ कहने इन के से मैं गुलशन को धाई। पूरनमल को हमराह लिवा कर लाई ॥ महाराज बताई थी इन को बीमार। सुन कर आया वह महलन में तनक न करी अवार ॥ रानी ने की बेटा संग झटको पटकी। करने को भोग पूरनमल से इन हटकी। महाराज कुमर नीचे को कर के नैन। माता करो माफ मुझ को यों लगा दमबदम कैन ॥ मजबूर छोड़ वह पेंटा और कटारी। भग गया महल से पूरनमल बृह्मचारी ॥

छन्द—रानी ने राजा को बुला धोखे का जाल बिछा दिया।
पूरन किया जबरन जिना भूपति को यों समझा दिया ॥
पूछा था मुझ से नृपति ने बातें बना दीनी मैंने ।
जैसा कहा रानी ने हां में हां मिला दीनी मैंने ॥
रानी के कहने का अजी बिश्वास बिलकुल आगया ।
पूरन कुमर मरवा दिया अपयश जगत में का गया ॥

ला०—महाराज नहीं छोड़ा उस ने ईमान। कायम रहा धरम पर स्वामी पूरनमल सुजान ॥

दो०—क्या कहती ये अनुचरी, कर दिल अन्दर ख्याल।
रानी तू भी बता दे, सच्चा सच्चा हाल ॥

छन्द—दे ना बता सच हाल बोली झूँठ तो दुख पाइगी। अपयश जगत में होयगा आखिर नरक को जाइगी॥ तारीफ़ पूरन की करें नर नारि सब इस नगर के। कहते हैं सच था हैं सभी ये पक्षपाती कुमर के॥ नृप पुत्र को अशराफ़ नेक शरीफ़ बतलाते हैं सब। उस की मुहब्बत यादगारी में ये दुख पाते हैं सब॥ क्यों बन गई ऐसी निठुर रानी ये तैंने क्या किया। कहते हैं सब मौसी ने पातक लगा के मरवा दिया॥

फूलन्दे का

दो०—मो पापिन से बन गया, स्वामी बड़ा अधर्म।
बिना खता मरवा दिया, सुत को किया कुकर्म॥

भजन—यों ही मरवायो मैंने कुमर हज़ारी। यों ही मरवायो बेटा को पाप कियो अति भारी। निर्दोषी को दोष लगायो ऊंच नीच मन नेक ना बिचारी॥ योंही०॥ हुई जवानी में दीवानी सारी बुद्धि बिसारी। सुत के ऊपर चित्त डिगायो मो सम कौन अधरमिन नारी॥ योंही०॥ कहन न टुक बांदी की मानी समझा समझा हारी। धमकाई महलन बुलवायो पूरनमल सो सुत ब्रह्मचारी॥ योंही०॥ दिलबर दिलजानी कह सुत से अपनी जीभ बिगारी। ऊंची नज़र करी नहीं बानैं कहत रह्यो मोसे मौसी महतारी॥ योंही०॥ पतिव्रत धर्म सन्त जी सुत ने बरज्यौं मेरे अगारी। एक न मानी कहन पुत्र की इश्क नशा में मैं तो भई मतवारी॥ योंही०॥ जबरन छीन लई छैया से फेंटा और कटारी। दे सबूत भूपति को झूंठा सितम कराई मैंने सुत की ख़्वारी॥ योंही०॥

पूरनमल का

क०—ये क्या किया निर्दोष को रानी तें दोष लगा दिया । परमात्मा को कर कपट पापात्मा जो बना दिया ॥ बुलवा महल छल फन्द से अनुचित करी फरजन्द से । तू नहीं डरी गोबिन्द से तैंनें कुल को दाग़ लगा दिया ॥ बांदी से कर तू ने सल्हा भूपति को महलों में बुला । कैसे तेरा होगा भला धोखे का जाल बिछा दिया ॥ निर्दोष को रानी सता क्या मिल गया तुझ को बता ॥ मरवा दियो उसे बेखता दुनियां से नाम मिटा दिया । राजा बड़ा दुर्भाग था बेटा का दिल पर दाग़ था । जोगी का दिया चिराग़ था उस को भी तू ने बुझा दिया ॥

फूलन्दे का

दो०—स्वामी दासी से बना, बेशक बड़ा कसूर ।
अब मुझको ज्यादा प्रभो, करो मती मजबूर ॥

बहरत०—जो था होना सो होकर रहा सन्त जी, मैं चरण आप के में झुकाती हूं सर । अपनी करतूति से खुद ही लाचार हूं, मैंने मरवा दिया हा हजारी कुमर ॥ मो अधरमिन ने कीना है अधरम बड़ा, सुत की नेकी में स्वामी न कुछ भी कसर । कैसे उद्धार हो मेरा इस पाप से, अब बताओ जतन कर महर की नज़र ॥

पूरनमल का

बहरत०—क्यों तू रोती है होती है लाचार अब, बृह्मचारी को पहले सताया तैंने । तू हुई पाप में लीन खुद पापिनी, धर्म धारी को पापी बनाया तैंने ॥ क्या था मतलब तेरे दिल का दे सब बता, जो जती को महल में बुलाया तैंने । तेरा उद्धार कर तुझ को बरदान दूं, क्यों कि कुल हाल सच्चा बताया तैंने ॥

फूलन्दे का

बहरत०—इच्छा सन्तान की थी मुझे हे प्रभो, पुत्र होने का नृप से सहारा गया । आश पूरन हो पूरन से मन में समझ, किया अधरम धरम ना विचारा गया ॥ बृह्मचारी को महलों बुलाया

मैंने, तो भी निष्फल मनोरथ हमारा गया। हाथ आया न कुछ
भी मेरे सन्त जी, वे खतः मारा पूरन दुलारा गया॥

पूरनमल का

बहरत०—ऐरी रानी वृथाँ रोवे हो २ विकल, काहे निष्फल मनो-
रथ तुम्हारा गया। शान शौकत में पूरन से मिलता हुआ,
होगा बेटा हुकम हो हमारा गया। जा चली जा न करना तू
अधरम कभी, तेरे दिल का हो दुख दूर सारा गया। जो गया
सो गया फिर के आया हुआ, जग में रानी न कोई निहारा गया॥

कवि का

दो०—पूरनमल के बचन सुन, रानी परम हुलास।
रूपेशाः आ सन्त से, करन लगे अरदास॥

रूपेशाः दीवान का

दो०—चरण कमल में प्रभू के, पुनि २ नाऊं माथ।
मेरी भी बिपता हरो, सतगुरु दीनानाथ॥

ग़०—हे सत्य सतगुरु सबूत दुख सबका मिटाया आपने।
रानी अधम पापिन को भी गम से छुटाया आपने॥
यह बाग मुद्दत का पड़ा था सूख कर बरबाद हो।
कर के कृपा हे दयानिधि हरियल बनाया आपने॥
कीजै अनुग्रह दास पर निज चरण का सेवक समझ।
आ दीन जन के दुख हरण कर सुख दिखाया आपने॥
बन्ध्या है मेरी नारि सुत से नाथ प्रभु वंचित रखा।
बेड़ा किनारे क्यों न सेवक का लगाया आपने॥
इस वृद्धपन में मेरी स्वामी बस यही अभिलाष है।
दीजै मुझे भी पुत्र सब का दुख नशाया आपने॥

पूरनमल का

ग़०—धर ध्यान श्री भगवान का फ़ौरन हो बेड़ा पार हो।

मन्त्री तेरा भी इस अगम दुख से अविस उद्धार हो ॥
यह बिमल फल दीना मैंने देना खिला निज नारि को।
हो गर्भ धारण त्रिया के अनुकूल जो करतार हो ॥
रह धर्म पर आरूढ़ तू सन्तान से फूलै फलै ।
निश्चय समझ मन में तेरे पैदा सुवन सुकुमार हो ॥
चारों पदारथ जगत में पाना सुलभ हैं ऐ सचिव ।
कवि इन्द्र कों गोविंद का जो निष्कपट आधार हो ॥

कवि का

दो०—पूरनमल सब को करै, या विधि सद उपदेश ।
तब आ अम्बादे कही, मन में पाय कलेश ॥

अम्बादे का

दो०—फूलन्दे और सचिव की, दूर बिपति प्रभु कीन ।
मो दुखिया दुर्भाग्य की, खबर न स्वामी लीन ॥

खा०ज०—दीन दुखित अन्धी का हीना जोगी जी तुम ध्यान बिसार । सुत वियोग में सहूं स्वामी मैं निश दिन कष्ट अपार ॥ कढ़ें न पापी प्राण हमारे भारी दुक्ख उठाती हूं । बेकल होकर हर घड़ी दृग से नीर बहाती हूं ॥ बीते बारह साल रात दिन मछली सी घबड़ाती हूं । तड़प २ कर धरणि पर पलट पछारें खाती हूं । खाऊं जहर गले अपने में मरजाऊंगी मार कटार ॥ सुत० ॥

पूरनमल का

खा०ज०—होना सो होगया अरी रानी क्या इन बातों में सार । क्यों रोती है व्यर्थ अब मन से झूंठा मोह बिसार ॥ जिस दम मरा पूत उस दम ही क्यों नहिं तैने गमाये प्रान । दुख पाने को रही थी जिंदा क्यों बतला नादान ॥ अब ये लोग दिखाने को क्यों करती सुत का शोक महान । सुख से रहता नहीं कोई

माई यह सच्ची ले मान । मरना क्या आसान समझ रक्खा रानी मन माहिं विचार ॥ क्यों० ॥

अम्बादे का

आ०लं०—स्वामी सत्य बचन कहते हो मरना नहीं सुगमआसान। मरजाती तो भोगता कौन कर्म फल दुक्ख महान ॥ पूर्व जन्म में किये पाप सो उदय हुए अब स्वामी आन । मिटै न हरगिज़ संत जी होनहार होती बलवान ॥ आंखों से दीखता न मुझको हुई सब तरह मिट्टी ख़्वार ॥ सुत० ॥

पूरनमल का

आ०लं०—अब मिलने को नहीं पुत्र पूरन तेरा कर मन में ख्याल। मुद्दत होगई मरे उस को बीती हैं बारह साल ॥ जो बरदान मांगना रानी मांग दऊं तुझको ततकाल । दीन देख कर तेरे ऊपर हित चित से हुआ दयाल ॥ कृपा करें गोविंद प्रभू तो दऊं दुक्ख तेरा सब टार ॥ क्यों० ॥

अम्बादे का

दो०—और न कुछ इच्छा प्रभो, यह बर दीजै मोय ।
अन्धी से सूझत करो, दरश आपका होय ॥

कवि का

दो०—माता के सुन कर बचन, पूरनमल ततकाल ।
सुमिर हृदय गुरु देव को, दई विभूति निकाल ॥

पूरनमल का

दो०—यह विभूति एकान्त जा, नैन लगाओ मोय।
हो प्रकाश गुरु कृपा से, सब सन्ताप नशाय ॥

कवि का

दो०—सुन कर पूरन के वचन, अम्बादे हरषाय ।
जा विभूति एकान्त में, नैनन लई लगाय ॥

छं०—लगते बिमखुली ल गये, दोऊ दग उजारा होगया ।

दीखन लगा है ज्यों का त्यों दुख दूर सारा होगया ।
हो मगन रानी सन्त के दरशन किये हैं आन के ।
कहने लगी दुख पाय सुत अपना लिया पहचान के ॥

अच्छादू का

दो०—तू पूरनमल लाल है, लिया मैंने पहचान ।
रूप बनाया सन्त का, धोखा दीना आन ॥

चौ०—धोखा दीना आन आँख मेरी में नहीं कसर है ।
ज्यों का त्यों निशान तिल का बेटा तेरे मुखपर है ॥
मुद्दत बाद मिला तू सुत ईश्वर की महर नजर है ।
बतलादे कौना तुझको किसने कर दिया अमर है ॥

क०—गया मारा तू जब से चैन इक पल को न पाया है ।
बादनारी तेरी में लाल दुख भारी उठाया है ॥
ब मुश्किल से ये ईश्वर ने वक्त मुझको दिखाया है ।
किया राम को रफे बिछड़ा हुआ बेटा मिलाया है ॥

दो०—अजब ईश्वर की माया । भेद उसका नहीं पाया ॥
जिधर की फेर नजर दे ।
राई को पर्वत करदे पर्वत को राई करदे ॥

पूरनमल का

दो०—क्यों माता हुई बावली, दीना होश बिसार ।
पूरनमल सुत बताती, तू हमको हर बार ॥

चौ०—तू हमको हर बार बताती है पूरनमल माता ।
मरा हुआ इन्सान न फिर वापिस दुनियाँ में आता ॥
माता पिता पुत्र भ्राता सब जग का झूंठा नाता ।
माया के बस हो प्राणी अपना अपना बतलाता ॥

दो०—छोड़ इस मोह जाल को । हटा दिल से काचाल को ॥
कहे क्या मेरा मेरा ।
था कुछ तेरा ना कुछ मेरा है यहां रैन बसेरा ॥

अम्बादे का

दो०—मैं हरगिज मानूं नहीं, क्यों देता है चाल।
छाती ठंडी कर मेरी, गोदी में आ लाल॥

का०—मो दुखिया को तू क्यों दुख दिखलावे है। कर तरस कन्हैया नाहक तरसावे है॥ मेरे लाल उठाये मैंने कष्ट महान। तब तेरी सूरत दिखलाई बेटा श्री भगवान॥ सौतिन बैरिन ने तुझे कत्ल करवायो। लेकिन ईश्वर ने फिर तू कुमर जिलायो॥ मेरे पुत्र सुनादे अब तू सारा हाल। किसने और कैसे जिन्दा कीया पूरनमल लाल॥

पूरनमल का

का०—हा गजब करै जोगी को पुत्र बतावे। क्यों मात बिना मतलब तू हमें सतावे॥ ऐरी रानी न मैं पूरनमल तेरा लाल। हूं अवधूत पूत जोगी का है किस तरफ ख्याल॥ जग में हों लाखों तेरे सुत की सानी। भ्रम के बस होकर क्यों कर तू बौरानी॥ ऐरी रानी जिस दिना पूरन छोड़े प्रान। क्या कह गया उस दिना तुझ से सोच जिगर दरम्यान॥

कवि का।

दो०—सुन कर पूरन के बचन, रानी चतुर प्रवीन।
मसके कुच दोऊ करन से, तनक न देरी कीन।

चौ०—तनक भई ना देर धार पय प्रगटी दोऊ कुचन से।
गिरी सन्त के मुख में देखें सब नर नारि नयन से॥
यह चरित्र लखि पुरवासी सब मगन भये तन मन से।
अम्बादे हो खुशी पुत्र को पकड़ा दोऊ करन से॥

दो०—देख सुत को सुख पावै। न फूली अङ्ग समावै॥
मधुर बानी रस सानी।
चूमि कुमर की पेशानी बोली अम्बादे रानी॥

अम्बादे का

दो०—मो दुखिया पर आज दिन, है भगवान दयाल।

पुनर्जन्म दे मिलाया, मुझ से मेरा लाल ॥
चौ०—मुझ से मेरा लाल मिलाया बिछुड़ा हुआ दुबारा ।
डूबत शोक सिंधु से फिर ईश्वर ने दिया सहारा ॥
बारह साल पिछारी मुख देखा सुत मैंने तुम्हारा ।
हुए दुक्ख सब दूर लाड़ले जब से तुम्हें निहारा ॥

दौ०—हुआ जिन्दा तु कैसे । बना जोगी तू कैसे ॥
हाल सब लाल सुनाना ।
कहैं इन्द्र गोविन्द मेरे दिल का सन्देह मिटाओ ॥

पूरनमल का

दो०—कत्ल करा फिकवा दिया, भूपति ने मैं मात ।
जिंदा कर संग ले गये, मुझ को गोरखनाथ ॥

छन्द—महाराज गोरखनाथ ने मैया मुझे कीना अमर ।
मैंने सकल भ्रम जाल दे कर ज्ञान कर दीना अमर ॥
आया करन दरशन तेरे चरणों में सर नाता हूं मैं ।
दुख दूर सब के होगये तीरथ करन जाता हूं मैं ॥

अम्बादे का

ला०—मो दुखिया को क्यों फिर दुख दिखलाता है। मैया को तड़फती छोड़ कहां जाता है ॥ अब रहो यहीं तुम कहीं न जाओ छैया। मैया अपनी को धीर बंधाओ छैया ॥ मो दुखिया को अब दुख न दिखाओ छैया । मैं बहुत रोचुकी हूं न रुलाओ छैया ॥ क्यों हक्कनाहक्क मुझ को सुत कलपाता है। मैया को तड़फती छोड़ कहां जाता है ॥

पूरनमल का

ला०—अब नहीं कुपंथ में मात फंसा जाता है। ये पन्थ फ़क़ीरी का मुझ को भाता है ॥ नहीं मोह रहा जग मिथ्या पहचाना

॥ झूठे झंझट में मन को भटकाना है ॥ कर के मन इन्द्री मन पार जाना है । कुछ सार नहीं दुनियां का तत्व जाना ॥ देखत का नाता तात भ्रात माता है ॥ ये पन्थ फ़कीरी

कवि का

दो०-पूरनमल के सुन बचन, माता होइ अधीर ।
कहन लगे तब शंखपति, भर नैनों में नीर ॥

शंखपति का

दो०-पूरनमल सन्मुख तेरे, उठै न ऊंची नार ।
अपनी करनी पर कुमर, हूं भारी लाचार ॥

चौ०-हूं भारी लाचार जिगर अपने शरमाऊं बेटा ।
बिन समझे तुझको मरवाया अब पछिताऊं बेटा ॥
नहीं जोग के योग उमर तुमको समझाऊं बेटा ।
करो राज तुम राम भजन में ध्यान लगाऊं बेटा ॥

ला०-कीना अनर्थ अति मैंने कुमर हज़ारी । बेखता कराई लाल तुम्हारी ख़्वारी ॥ मेरे लाल कटाया व्यर्थ गला तेरा । ईश्वर के दरबार होय किस तरह भला मेरा ॥

छन्द-अब चैन नहीं चित को पड़ै सब तौर मिट्टी ख्वार है ।
अपयश हुआ जग में मेरा हा जिन्दगी धिक्कार है ॥
रानी के बस फँस यह गज़ब बेटा मेरे से होगया ।
सोचा न कुछ अनुचित उचित बस क्रोध के में मोगया ॥

ला०-अब खता हमारी दिल से कुमर बिसारो । चल स्याल-कोट का छत्रा राज सम्हारो ॥ मेरे लाल न कर पहली बातों का ख़्याल । होना था सो हुआ हटादो दिल से रञ्ज मलाल ॥

पूरनमल का

दो०-दादाजी दिल पर मेरे, तनक न रञ्ज मलाल ।
बीती बातों का नहीं, कीजै आप ख्याल ॥

छं०—करो राज्य भय दूर शोक में क्यों खायो गोता है।
भोगो सुख से राज्य पिता रोने से क्या होता है॥
रोना गम करना उदर भरना पछिताना थोता है।
होनहार वश हो प्राणी सुख दुक्ख बीज बोता है॥

दो०—राज की मुझे न इच्छा। करूं घर घर में भिक्षा॥
हुक्म गुरुवर का पाया।
जाऊंगा मैं वहीं आप का दर्शन करने आया॥

शङ्खपति का

दो०—ठान न ऐसी ठानिये, बेटा प्राण अधार।
भोगो चल कर राज सुख, भगवां वस्त्र उतार॥

छन्द—भगवां उतारो वस्त्र धारो राज सी भङ्गार तन।
यह तजि फ़क़ीरी भेष चल कर तख़्त पर बैठो सुवन॥
है उमर तेरी बाल बेटा अति कठिन यह पन्थ है।
थकि गए बहुत इस उमर में पाया परन्तु न अन्त है॥
तेरे बिना मम धाम वैभव सब पड़े सूना नगर।
है तुही अकेला पुत्र दीपक भवन मेरे का कुमर॥

पूरनमल का

दो०—मैं हरगिज़ रहना नहीं, कहो आप हरचन्द।
बन्धन भव सन्सार का, मेरी नहीं पसन्द॥

भजन—इस भव सागर सन्सार से हो पार हमें जाना है। ज्ञान पंथ गुरु ने सिखलाया। सुलभ मुक्ति का मार्ग बताया॥ मन का सब संताप मिटाया॥ नहीं रहा मोह परिवार से॥ जग झूंठा पहचाना है॥ इस०॥ राज पाट सब सम्पति नाना। है इस जग में स्वप्न समाना॥ होता तन तजि सब को जाना॥ सोचो तनक विचार से। मन यों ही भटकाना है॥ इस०॥ तात मात दारा सुत भ्राता। कुटुम कबीला झूंठा नाता।मन्न

समय कोई काम न आवा। बोलें जो हर दम प्यार से ॥ फिर सब ने भय माना है॥ इस०॥ न मैं मोह फन्दे में आऊं। पास गुरू अपने के जाऊं। जन से आवा गवन मिटाऊं॥ जो जगा के सर्वाधार से॥ मोक्ष मुक्ति परम पाना है॥ इस०॥

कवि का

दो०—पूरनमल के सुन बचन, भूपति मन अकुलाय।
आह सर्द भर एक दम, गिरा जमीं गश खाय॥
सोरठा—झटपट लिया उठाय, पूरनमल ने पिता को।
कहन लगा समझाय, धीरज दे इस तौर से॥

पूरनमल का

दो०—अमर ठान ठानों पिता, मो मन ऐसी आय।
दरश कराऊँ गुरू का, मिटें सकल सन्ताप॥
सोरठा—सुनिये श्री महाराज, आंख बन्द सब कीजिये।
दरशन होंगे आज, तुम्हें गुरू महाराज के॥

कवि का

दो०—मात पिता को पास दे, पूरनमल सुज्ञान।
नेत्र बन्द करवाय के, होगया अन्तरध्यान॥
छन्द—होकर के अन्तरध्यान गुरु के पास झट आया कुमर।
कर दरश गोरखनाथ का मन मांहि हरषाया कुमर॥
देखा न सुत को विकल इत रानी नृपति होने लगे।
पूरन कुमर पूरन कुमर बिल्लाय कर रोने लगे॥

नृपति का

दो०—धोखा दे के कन्हैया, करवा आंखें बन्द।
कहां छिपा तू आय कर, पूरनमल करणन्द॥

बहरत०—दी करा बन्द आंखें सबों की कुमर, ध्यान गोरख गुरू का कराया तैने। दीना धोखा न मन में विचारी दया,

हुआ, सुख दिखा बेटा फिर दुख दिखाया तैने । इस अगम शोक सागर से बेड़ा मेरा, ना किनारे से छौना लगाया तैने ॥

अम्बादे का

बहरत०—छैया गैया सी मैया बिलकती तजी, हा तनक भी दया ना विचारी कुमर । दे के धोखा गया तू कहां लाडिले, क्यों मुहब्बत कुटुम से बिसारी कुमर ॥ जैसे तैसे व मुश्किल से छौना मैंने, तेरी सूरत नयन से निहारी कुमर । तू यकायक ही गायब यहां से हुआ, अब सबर कैसे लाऊं हजारी कुमर ॥

शंखपति का

बहरत०—मुझ अभागे का मन में तनक भी तरस, तू ने छौना पिरौना बिचारा नहीं । अपने माता पिता का दुखोना हृदय, मेरे छैया ये करतब तुम्हारा नहीं ॥ पाया तुझको निराशा से आशा हुई, समझा होगा जुदा अब दुलारा नहीं । तू दगा दे गया मुझे पूरन कुंवर, रहा जोने का जग में सहारा नहीं ॥

अम्बादे का

बहरत०—मैंने जाना कि अब दिन हमारे फिरे, दुख टला मिल हमारा दुलारा गया । फिर पटक दुख के दुख में मुझे अब कुमर, तू बता कर किधर को किनारा गया ॥ अब करूं कैसी जाऊं कहां मैं समा, हो जुदा मुझ से प्राणों का प्यारा गया । बिना पूरन के पूरन करूं जिन्दगी; हो खतम आब-दाना हमारा गया ॥

कवि का

दो०—हिस्सा तीसरे में कहा, ये तमाम अहवाल ।
बाकी चौथे भाग में, देखो आगे हाल ॥

पं०—नथाराम शर्मा गौड़ के श्याम प्रेस हाथरस में
प्रिंटर व पब्लिशर पं० राधावल्लभ शर्मा गौड़ द्वारा मुद्रित।

संगीत महाभारत

हिन्दी भूषण पंडित नथाराम शर्मा गौड़ रचित

१	२
कौरव पांडव उत्पत्ति	द्रौपदी स्वयम्बर
जरासिन्धु शिशुपाल बध	चौसर की बाज़ी
द्रौपदी चीर हरन	उरवसी बरदान
नकली द्रौपदी कीचक बध	भयङ्कर भूत
अभिमन्यु विवाह	पैगामे जङ्ग
कृष्ण निमन्त्रण	भवानी बरदान
ब्रह्मचर्य का प्रताप पहला भाग व दूसरा भाग	
तीसरा भाग	भगदत्त बध
अभिमन्यु समर	अभिमन्यु स्वर्गवास
अर्जुन प्रतिज्ञा	जयद्रथ रक्षा बचन
जयद्रथ बध	द्रौण स्वर्ग बास
करण बध	शल्य बध
दुर्योधन बध द्रौपदी पुत्र मरण	फौलादी भीम
भीष्म शरीर त्याग	घोड़े की चोरी
ज्वाला का जौहर	सुधनवा संग्राम
अरजुन का काल	ज़हरीला खत [चन्द्रहास]
बीर बरमा संग्राम	बिदुर तपस्या
कृष्ण गौलोक गवन	पाँडव सुरपुर गवन

गोविन्द चमन तोताराम-कृत सङ्गीत

ढेबा का ब्याह	धांधू का ब्याह
ब्रह्मोरन का ब्याह	गलखान का ब्याह
क अफ़जा बहराम	ब्रह्मा का ब्याह
ऊदल हरन	सुरजावति का झूला
मछला हरन	

पुस्तक मिलने का पता—

[illegible]